युवा प्रभाग-दिव्य दर्पण ग्रुप
मई 2011 मास के पुरुषार्थ की प्वाइंट्स

मई मास का चार्ट:

लक्ष्य – संस्कार मिलन की महारास करनी है।

बापदादा के महावाक्य (16/03/11): "सदा चेक करो कि मुझे ब्राह्माण परिवार के बीच संस्कार मिलन की रास करनी है। उसकी डेट भी फिक्स करो। कितना समय लगेगा जो ब्राह्मण परिवार में कहाँ भी कभी भी संस्कार अपना कार्य नहीं करे। चाहे मेरा संस्कार, चाहे दूसरे का संस्कार भी, मेरे पर प्रभाव नहीं डाले। अगर हर आत्मा के प्रति सदा शुभ भावना और शुभ कामना रखो, नम्बरवार तो होना ही है। भिन्न-भिन्न संस्कार हैं लेकिन हमको संस्कार देखने के बजाए शुभ भावना शुभ कामना रखनी है। आखिर भी ब्राह्मण परिवार है ना। कैसा भी है, परिवार तो मेरा है ना। "

आओ हम सभी मिलकर संस्कारों की महारास करें और बाबा को संसार के सामने अपने चेहरे और चलन से प्रत्यक्ष करें।

विधि :

सप्ताह	दिव्य दर्पण का पुरुषार्थ
पहला	एक दूसरे के गुण ही देखें वा वर्णन करें
दूसरा	शुभ भावना और कामना रख मनसा सेवा करें
तीसरा	एक दूसरे को सहयोग देना
चौथा	एक दूसरे को सम्मान देना

1. एक दूसरे के गुण ही देखें वा वर्णन करें: हम सभी कोटों में कोई और कोई में भी कोई ऐसी विशेष आत्माएं हैं जिन्हें स्वयं भगवान ने चुना है। हर ब्राह्मण में कोई न कोई विशेषता जरूर है। लास्ट दाने में भी विशेषता जरूर है। केवल मुझे उसे देखने का प्रयत्न करना है। अपनी डायरी में जिस आत्मा से आपकी रास नहीं हो रही है उसके गुणों को नोट करें और उसका वर्णन करें। न सिर्फ उसके सामने परन्तु उसकी अनुपस्थिति में भी करें। हम कितने % गुणों का वर्णन कर पाये वह लिखना है।
2. शुभ भावना और कामना रख मनसा सेवा करें: रोज समय निकालकर उस आत्मा के प्रति अमृतवेले के पश्चात् 5 मिनट भी मनसा सेवा जरूर करें और मन ही मन उस के प्रति रूहानी स्नेह रखें। हमारे सच्चे दिल की शुभ भावना और कामना किसी भी आत्मा तक चाहे वो कितनी भी दूर (सूक्ष्म वा स्थूल) क्यों न हो लेकिन पहुँचती जरूर है। हमने कितने % किया, वह लिखना है।
3. एक दूसरे को सहयोग दें: प्रेक्टिकल में हमें उस आत्मा को सहयोग देना है। हम इन्तजार न करें कि वह हमें कहे फिर हम उसे सहयोग दें, हम मना थोड़े ही करते हैं! परन्तु हमें उस आत्मा को दिल से सहयोग देना है तब ही उस आत्मा का संस्कार परिवर्तन हो सकता है। हमने कितने % सहयोग दिया, वह लिखना है।
4. एक दूसरे को सम्मान दें: संस्कार मिलन न होने का मुख्य कारण ही यह है कि किसी की विशेषता को देखते अन्दर देह अभिमान के कारण सूक्ष्म ईर्ष्या उत्पन्न होती है जो हमें उस आत्मा की विशेषता को स्वीकार नहीं करने देती और उसी कारण से हम उस आत्मा को जहाँ तहाँ सभी के बीच गिराने का प्रयत्न करते हैं। यह मेरा ही परिवार है अगर किसी में विशेषता है तो हमें गर्व होना चाहिए कि वह मेरा ही भाई वा मेरी ही बहन है। हम एक-दूसरे को दिल से सम्मान देवे। हम कितने % सम्मान दे सके, वह लिखना है।

❖ विशेष अभ्यास: अभी अपने परिवार सतयुग का साथी और रॉयल प्रजा, साधारण प्रजा सब अभी बना सकते हो। 21 जन्म की गैरन्टी है। थोडी सी सेवा करो, समय निकालो क्योंकि आपके पास संकल्प शक्ति तो है ही। सिर्फ जो है वह अपने भाई-बहनों को भी दो।

❖ फ्रेमबुक में ऊपर चार पंक्तियों में निम्नलिखित बिन्दु लिखकर उसका परिणाम प्रतिदिन रात को सोने से पहले लिखें:

1.अमृतवेला - 3.30 से 4.45, बाबा के कमरे में 2.मुरली क्लास - क्लास में सुनी 3.ट्रैफिक कन्ट्रोल- 5
4.स्वमान की स्मृति -बहुत अच्छी 5.अव्यक्त मुरली पढ़ी? - हाँ जी 6. नुमाशाम का योग- हाँ जी
7. संस्कारों की रास की: 60 % 8.गुड नाइट- 10.30

❖ विशेष अभ्यास के साथ-साथ फ्रेम बुक में आज की मुरली के पश्चात् कम से कम 21 बार आज का स्वमान लिखना है या चिन्तन कर 10 प्वाइंटस लिखनी है एवं कोई अनुभव हुआ हो तो वह ज़रूर लिखें।

❖ स्वमान:

1. मैं आत्मा गुणमूर्त हूँ।	16. मैं आत्मा सर्व स्नेही हूँ।
2. मैं आत्मा गुणवान हूँ।	17. मैं आत्मा ऑफर कर आफरीन लेने वाली हूँ।
3. मैं आत्मा गुणचोर हूँ।	18. मैं आत्मा निर्मानचित्त हूँ।
4. मैं आत्मा होली हंस हूँ।	19. मैं आत्मा रहमदिल हूँ।
5. मैं आत्मा मा.गुणों की भण्डारी हूँ।	20. मैं आत्मा क्षमाशील हूँ।
6. मैं आत्मा गुणदान करने वाली हूँ।	21. मैं आत्मा सहयोग से दुआएँ लेने वाली हूँ।
7. मैं आत्मा गुणग्राही हूँ।	22.मैं आत्मा श्रेष्ठ स्वमानधारी हूँ।
8. मैं आत्मा शुभ भावना रखने वाली हूँ।	23.मैं आत्मा सर्व को सम्मान देने वाली हूँ।
9. मैं आत्मा शुभ कामना करने वाली हूँ।	24.मैं आत्मा सम्मान की नज़र से देखने वाली हूँ।
10. मैं आत्मा शुद्ध संकल्पधारी हूँ।	25. मुझ आत्मा का महामंत्र है सम्मान देना और लेना।
11. मैं आत्मा मनोबल से सम्पन्न हूँ।	26. मैं आत्मा सम्मान देकर सारे कल्प में सम्माननीय बनने वाली हूँ।
12. मैं आत्मा शुभ कामना का फरिश्ता हूँ।	27. मैं आत्मा कुलदीपक हूँ।
13. मैं आत्मा मनजीत जगतजीत हूँ।	28. मैं आत्मा ईश्वरीय परिवार की गरिमा बढ़ाने वाली हूँ।
14. मैं आत्मा मन की मालिक हूँ।	29. मैं आत्मा सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण हूँ।
15. मैं आत्मा सर्व सहयोगी हूँ।	30. मैं आत्मा सम्माननीय संसार बनाने वाली हूँ।
	31. मैं आत्मा संस्कार मिलन की महारास करने वाली हूँ।

❖ हर मास के प्रथम सप्ताह में यह पोस्टकार्ड लिखकर महादेवनगर युवा प्रभाग कार्यालय में भेजना है।

नाम:_____ **सेन्टर का नाम:**_____ DiDar No:_

गुड मॉर्निंग-90% **अमृतवेला-75%**
व्यायाम/पैदल-80% **ट्रैफिक कन्ट्रोल-45%**
मुरली क्लास-90% **नुमाशाम का योग-45%**
स्वमान की स्मृति-55% **अव्यक्त मुरली पढ़ी?-80%**
संस्कार मिलन की रास -60% **गुड नाइट-95%**

चार्ट: OK या ~~OK~~ **टीचर के हस्ताक्षर**

मैं मर्यादा पुरुषोत्तम ग्रुप में जुड़ना चाहता हूँ।

Phone No: (079) 26444415, 26460944 Email: bkyouthwing@gmail.com
Website: www.bkyouth.org
To get sms Daily for Swaman Please type (Join DivyaDarpan) and send sms to 567678.